केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्रा	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

➔ प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उ ... परीक्ष ... निर्धारित मुद्रा

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक 1 (उत्तर)

(i) भगत जी
मराठी
भी
(iv) 1556
(v) दो
(vi) अर्थालंकार

B
S
E

प्रश्नक्रमांक 2 (उत्तर)

i) तहलका डाटकाम
ii) भार
iii) व्यतिरेक
iv) जैनेन्द्र कुमार
v) तीन
vi) पाठशाला

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक 3 (उत्तर)

i) असत्य
ii) असत्य
iii) सत्य
iv) सत्य
v) सत्य
vi) सत्य

प्रश्नक्रमांक 4 (उत्तर)

(क)		(ख)
अतरंग साक्षात्कार	-	डायरी
हरिवंशराय बच्चन	-	हालावाद
प्रगतिवाद	-	1936
यशोधरा	-	खण्डकाव्य
कथानक	-	कहानी
संस्कृत के मूल शब्द	-	तत्सम्
यशोधर बाबु	-	सिल्वर वैडिंग

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

ST-16

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक 5 (उत्तर)

i) पहलवान लुट्टन सिंह के दो पुत्र थे,

ii) किसी समस्या से पूर्णरूप से बचना,

iii) मुअनजो-दड़ो (मोहनजोदड़ो) सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है,

iv) रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट होती है,

B

S v) 'सूरज का साँतवा घोड़ा' धर्मवीर भारती की रचना है,

E vi) शांत रस का स्थायी भाव 'निर्वेद' होता है,

vii) आलोक धन्वा का एक मात्र काव्य संग्रह - 'दुनिया रोज बनती है',

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 6

महाकाव्य	रचनाकार
i) रामचरितमानस	गोस्वामी तुलसीदास ।
ii) कामायनी	जयशंकर प्रसाद ।

प्रश्नक्रमांक - 7 (अथवा)

वीररस :- अपने प्रतिकूल हुई स्थिति को अपने अनुकूल बनाने, लक्ष्य के को प्राप्त करने आदि के लिए जब हृदय में उत्तेजना, उत्साह उत्पन्न होता है, वहाँ वीर रस पाया जाता है। इसका स्थायी भाव 'उत्साह' है।

उदाहरण - बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 8 (अथवा)

मनुष्य की क्षमता निम्न तीन बातों पर निर्भर करती है-

i) शारीरिक वंश - परम्परा (जिस वंश में जन्म लेता है,)
ii) सामाजिक उत्तराधिकार (जो उसे प्राप्त होते हैं)
iii) व्यक्ति के अपने प्रयत्न,

B
S
E

उत्तरक्रमांक - 9

क्र	कहानी	क्र.	उपन्यास
i)	इस रचना में मानव जीवन की एक प्रमुख घटना का वर्णन होता है,	i)	इस रचना में मानव-जीवन का विस्तृत एवं सम्पूर्ण वर्णन होता है,
ii)	इसका आकार छोटा होता है, शीघ्र पढ़ी जा सकती है,	ii)	इसका आकार बड़ा होता है पढ़ने में अधिक समय लगता है,
iii)	पात्र संख्या कम होती है।	iii)	पात्र संख्या अधिक होती है,
iv)	इन्दुमती (किशोरी लाल)	iv)	परीक्षा गुरु (लाला श्री निवास)

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 10

निपात शब्द :- ऐसे शब्द जो किसी वाक्य में किसी शब्द के बाद प्रयुक्त होने से उस वाक्य के अर्थ पर विशेष बल उत्पन्न करते हैं, निपात शब्द कहलाते हैं, जैसे - भी, तो, नहीं, ही आदि,

i) आपको भी जाना पड़ेगा। ('भी' निपात शब्द)
ii) मोहन तो मूर्ख है, ('तो' निपात शब्द)

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 11

i) राम अयोध्या में आ जाना,

ii) ललिता बाजार से फूलों की एक माला लाई,

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 12 (अथवा)

"सिल्वर वैडिंग की भव्य पार्टी यशोधर बाबू को 'समहाउ इंप्रापर' लगने के बाद भी संतोषजनक रही", क्योंकि -

i) अनाथ यशोधर के जन्मदिन पर कभी भी लड्डू घर में नहीं आए परन्तु पार्टी में कई प्रकार की मिठाइयों को देखकर उन्हें अच्छा लगा।

ii) उनके बेटों (बच्चों) ने उनके लिए इतनी भव्य पार्टी रखी, जिसमें बहुत से बड़े लोग भी आए थे, जो बधाई दे रहे थे। इस कारण उन्हे पार्टी संतोषजनक लगी।

B S E

उत्तरक्रमांक - 13 (अथवा)

[redacted] माध्यम में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बाते निम्न हैं -

i) भाषा, वर्तनी, व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को दूर किया जाना चाहिए

ii) भाषा ज्यादा कठिन शब्दों मे न हो, सरल, सहज, आमबोल-चाल की भाषा में लिखना चाहिए।

iii) संकेतों, चिन्हों को शुद्ध रूप में लिखना चाहिए।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 14 (अथवा)

बच्चे अपनी माता के घर लौटने की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे, सुबह की निकली उनकी माता भोजन लेकर संध्या होने पर घर लौट रही होगी, उनके लिए भोजन ला रही होगी, भोजन की लालसा और अपनी माता को देखने की आशा में बच्चे नीड़ो से झाँक रहे होंगे, यहाँ प्रियजनों द्वारा प्रतीक्षा करने की स्थिति का संकेत किया है।

B
S
E

प्रश्नक्रमांक - 15 (अथवा)

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्सयायन 'अज्ञेय' द्वारा प्रकाशित पहला तार सप्तक 1943 के साथ प्रयोगवाद का आरम्भ हुआ। प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय ने इस युग में कहा - 'यह कवि नवीन राहों के अन्वेषी हैं', इस युग की विशेषताऐं निम्नलिखित हैं -

i) नवीन उपमानो, प्रतीको का प्रयोग,
ii) व्यक्तिवाद की प्रधानता,
iii) बौद्धिकता की प्रधानता,
iv) मुक्त छंदों का प्रयोग,

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 16

रघुवीर सहाय

दो रचनाऐं - आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए हैं,

भावपक्ष -

i) समाज के दलितों, निम्न वर्गों तथा विभिन्न विषयों पर संवेदनशीलता पूर्ण लेखन,

ii) आप यथार्थ के तथ्यों को पूरी स्वतन्त्रता से उजागर करने में दक्ष हैं,

iii) व्यंग्य प्रधान रचनाऐं की हैं,

कलापक्ष - i) भाषा - सहज, सरल, बोलचाल की भाषा में काव्य रचना की है, तद्भव, देशज, तत्सम शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया है,

ii) शैली - चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक, वर्णनात्मक, विचारात्मक शैलियों का प्रमुख रूप से प्रयोग किया है,

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

साहित्य में स्थान- प्रगतिवादी युग के प्रमुख कवियो में से एक नागर संवेदना के चितेरे कवि होने के साथ-साथ आप एक पत्रकार भी है, आपकी भाषा बैलोस (बेबाक) है, आप किसी भी विषय का वर्णन यथार्थता के साथ करने मे दक्ष है, हिन्दी साहित्य में आपका अद्वितीय योगदान रहा है,

---

प्रश्नक्रमांक -17

महादेवी वर्मा

दो रचनाऐं- यामा, स्मृति की रेखाऐ, अतीत के चलचित्र,

भाषा :- आपकी भाषा सुसंबद्ध संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक भाषा है, तत्सम, तद्भव, विदेशज, उर्दू के शब्दो का अद्भुत प्रयोग आपकी रचनाओं मे मिलता है, मुहावरो एवं लोकोक्तियों से आपकी भाषा में सशक्तता आ गई है,

शैली:- आपने भावनात्मक, चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक, विवरणात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया, प्रमुख रूप से 'चित्रात्मक शैली' का प्रयोग किया है,

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

साहित्य में स्थान -

छायावाद के चार स्तम्भों (प्रसाद, पंत, निराला, वर्मा) में एक, आधुनिक काल की मीरा कही जाने वाली महादेवी वर्मा का स्थान हिन्दी साहित्य में अभूतपूर्व है, आपके रचित संस्मरणात्मक रेखाचित्रों ने साहित्य के भंडार में विशेष योगदान दिया है।

प्रश्नक्रमांक - 18

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"

संसार में सबसे शक्तिशाली कोई है तो वह हमारा 'मन' है, मन की शक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह किसी मनुष्य को सफलता भी दिला सकती है और उसे असफल भी कर सकती है, किसी ने यदि अपने मन को वश में कर लिया तो वह किसी भी कार्य को पूरा कर सकता है, ये डर, भय, उत्साह, चिन्ता सभी मन की उपज होते हैं, यदि मन में आत्मविश्वास है और मेहनत करने में हम लगे रहते है तो हमें सफल होने से कोई नही रोक सकता, परन्तु मन में उत्पन्न डर, भय हमारी जीत को हार में बदल सकता है, इस संदर्भ में 'परीक्षा' सबसे सही उदाहरण है।

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 19

शीर्षक - "हमारा प्यारा भारत वर्ष,"

ii) भारतवासियों की विशेषताएं - i) अतिथियों का आदर करना, उन्हें देव समान मानना,
ii) दान को महत्व देना,
iii) सत्यवादी, हृदय में उत्साह, दृढ़ निश्चयी,
~~iv)~~

iii) हम अपने देश पर अपना तन, मन, धन, जीवन अर्थात अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकते हैं,

---

प्रश्नक्रमांक - 20

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक आरोह-2 के 'शिरीष के फूल' नामक पाठ से लिया गया है, यह निबंध 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' द्वारा रचित है,

(14)

प्रश्न क्र.

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में द्विवेदी जी ने शिरीष को अवधूत की संज्ञा दी है, पर्यावरण की कठिन स्थितियों में शिरीष मस्त लहकता रहता है।

व्याख्या - 'द्विवेदी' जी कहते हैं कि यह शिरीष का वृक्ष एक अवधूत अर्थात् अनासक्त संन्यासी की भाँति प्रकृति की कठोरतम स्थितियों में शिथिल होकर खड़ा रहता है, न किसी से लेन-देन, सभी परिस्थितियों में एक समान, यह पेड़ तपती गर्मी जब धरती और आसमान दहकने जैसे गर्म हो जाते हैं तब यह महोदय (शिरीष) न जाने कहाँ से ठंडक (रस) खींचकर जीवित रहता है, यह आठों पहर मस्त रहता है, गर्मी, उमस, लू का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

विशेष - i) शिरीष की तुलना अवधूत से की है,
ii) 'हजरत' शब्द विशेष सम्मान के लिए प्रयुक्त,
iii) सरल, सहज भाषा में तत्सम, उर्दू के शब्द प्रयुक्त हुए हैं,
iv) शिरीष की विशेषता बताई गई है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नक्रमांक - 21 (अथवा)

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह - 2' के 'उषा' नामक कविता से लिया गया है, इसके कवि 'शमशेर बहादुर सिंह' है,

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने सूर्योदय से पूर्व प्रकृति में होने वाले पल-पल के परिवर्तनों को बिम्बों की सहायता से चित्रित किया है, उषा (भोर) का वर्णन शब्द-चित्र के माध्यम से किया है,

व्याख्या - पंक्तियों द्वारा बिंबधर्मी कवि शमशेर बहादुर सिंह जी ने भोर के नभ अर्थात सूर्योदय से ठीक पहले के नभ का वर्णन करते हुए कहा है कि प्रात: काल का नभ (आकाश) नीले शंख की भाँति नीले रंग का स्वच्छ एवं निर्मल है, कुछ समय में ही यह आकाश राख से लीपा हुआ चौका जो गीला है, के समान स्लेटी रंग का और नमी युक्त लग रहा है, सूर्योदय होने वाला ही है, इस समय सूर्य की लाल किरणें ऐसी लग रही है मानो किसी ने पत्थर की सिल पर लाल केसर पीसकर उसे धुल दिया हो, यहाँ कवि ने सूर्योदय के प्रतिपल परिवर्तनों को गाँव के क्रियाकलापों से जोड़ा है,

विशेष - बिम्बों का प्रयोग अत्यंत सजीव एवं प्रभावपूर्ण किया है, (नीला शंख, राख से लीपा गया चौका, काली सिल), भाषा सरल, अलंकृति, प्रभावपूर्ण है,

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

सूर्योदय के परिवर्तनों को गाँव के क्रियाकलापों से बड़े ही सुंदर ढंग से जोड़ा है,

प्रश्नक्रमांक - 22.

निबन्ध
"प्रदूषण का बढ़ता प्रभाव"

रूपरेखा

i) प्रस्तावना
ii) प्रदूषण क्या है? इसके प्रकार,
iii) प्रदूषण से समस्याऐं
iv) प्रदूषण को रोकने के उपाय,
v) उपसंहार,

i) प्रस्तावना - एक बड़ी ही प्यारी पंक्ति है - "प्रकृति हमारे लिए, हम प्रकृति के लिए" अर्थात प्रकृति हमारे लिए अपना सब-कुछ दान कर देती है तो हमारा भी कर्तव्य है कि उसके लिए मनुष्य सुरक्षा प्रदान करे, उसका शोषण न करे, परन्तु मनुष्य इतना

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

स्वार्थी बन चुका है कि अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए उसने पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुँचाया है, आज पर्यावरण इतना प्रदूषित हो गया है कि शुद्ध नाम केवल एक शब्द बन गया है किसी वस्तु या तत्व की विशेषता नहीं,

ii) प्रदूषण क्या है? - प्रदूषण से तात्पर्य किसी प्राकृतिक तत्व में अवांछित, हानिकारक तत्वों का मिल जाना, जिससे वह अशुद्ध हो जाता है, प्रदूषण हर क्षेत्र में बढ़ गया है, कोई भी ऐसा पदार्थ, तत्व नहीं बचा जो प्रदूषित न हुआ हो,

प्रकार -

जल प्रदूषण - जलाशयों, जलस्त्रोतों में हानिकारक, विषैले पदार्थों का मिलना, जिससे जल अस्वच्छ, गंदा होता जा रहा है,

वायु प्रदूषण - वायुमंडल में हानिकारक धुआँ, विषैले तत्व मिलने से वायु प्रदूषित हो रही है,

ध्वनि प्रदूषण - तेज ध्वनियों में वाद्य यंत्रों के प्रयोग से, लाउड स्पीकर से ध्वनि प्रदूषण बढ़ रहा है,

मृदा प्रदूषण - मृदा में कचरा, विषैले तत्व मिलने से उसकी उर्वरक क्षमता कम होती जाती है,

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

iii) प्रदूषण से समस्याऐं -

पर्यावरण प्रदूषण के निरंतर बढ़ने से मनुष्य को ही उसका दुष्प्रभाव झेलना पड़ रहा है। 'जैसी करनी वैसी भरनी' पंक्ति पूर्णतयः लागू होती है अर्थात् जैसा कार्य करोगे, वैसा ही फल पाओगे, प्रदूषण से मनुष्यों के स्वास्थ्य पर सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है। जानवरों को भी इसका सामना करना पड़ रहा है।

विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जो मनुष्य की जान तक ले रही हैं,

अशुद्ध वायु में साँस लेने से श्वास्य संबंधी रोग बढ़ रहे हैं, जानवरों को रहने के लिए सुरक्षित स्थान नहीं मिल पा रहा है, पीने के लिए पानी नही मिल रहा है, वन समाप्त होते जा रहे हैं, वैश्विक ऊष्णीकरण बढ़ता जा रहा है। महामारी, बाढ़, प्राकृतिक आपदा हर क्षेत्र में मनुष्य के लिए संकट उत्पन्न कर रहे हैं,

iv) प्रदूषण को रोकने के उपाय -

मनुष्य ने इतना बड़ा संकट तो पैदा कर दिया है परन्तु जब उसके समाधान के लिए प्रयास करने की बात आती है तो मनुष्य को सरकार, दूसरे लोग याद आने लगते हैं, जब हमने गंदगी फैलाई है तो उसे साफ भी हमें ही करना होगा, मनुष्य को अपने स्तर से ही शुरुआत करनी

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

होगी, तब प्रदूषण को रोकने का कार्य पूर्ण हो सकेगा, प्रदूषण इतने जल्दी तो खत्म नहि होगा परन्तु हमे प्रयास लगातार करने चाहिए। वृक्षारोपण, कचड़े को यथास्थान पर फेकना, स्वयं की नियमित सफाई, जलस्त्रोतों में कचड़ा, पशुओं कोनन्हलाना आदि कार्यों से हम प्रदूषण को नियंत्रित कर सकते हैं,

उपसंहार :-

मनुष्य को अपनी भावी पीढ़ियो की सुरक्षा चाहिए तो उसे अपने क्रियाकलापों पर नियंत्रण रखना होगा, ऐसा ही चलता रहा तो हमारा और हमारी भावी पीढ़ियों का जीवन संकट में पड़ जाएगा, वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के बहुत से कार्यक्रम, समारोह संचालित हो रहे है, हम उनमें भागीदारी करके पर्यावरण सुरक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं, एक योग्य नागरिक होने के नाते हर मनुष्य को अपने आस-पड़ोस, घर, नगर को स्वच्छ एवं प्रदूषण रहित बनाने का पूरी लगन से प्रयास करना चाहिए, तभी हम स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण को बनाए रख सकते हैं,

पृष्ठ 20 के अंक कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र. 23

दिनांक - 06-02-2024.

10, भवानी नगर, वार्ड नं. 20
सिरोंज, विदिशा जिला, (म.प्र.)।

प्रिय मित्र कान्हा,
स्नेह,

आशा करता हूँ तुम परिवारसहित कुशल मंगल होगे। मैं भी यहाँ स्वस्थ एवं कुशलमंगल हूँ। तुमको यह जानकर खुशी होगी कि अगले महीने की 25 तारीख को मेरे बड़े भाई राज की शादी आने वाली है, मैं सपरिवार तुम्हें आमंत्रित करना चाहता हूँ, हम शादी में बहुत मजे करेंगे, शादी की और जानकारी इसके पत्र के साथ संलग्न निमंत्रण कार्ड में दी हुई है, शादी के कुछ दिन पहले ही आ जाना जिससे हम साथ में समय बिता सके,

बाकी सब कुशल है, काका-काकी को मेरा प्रणाम और राधिका को स्नेह,

तुम्हारा मित्र,
मोहन